63

बुराई का अन्त

(20:1-3, 7-10)

बहुत पहले शैतान का भविष्य तय कर दिया गया था। जो सिंहासन पर विराजमान है, न्याय के दिन वह अपने दाहिने ओर वालों से कहेगा, ''हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो *शैतान और उसके दूतों के लिए* तैयार की गई है'' (मत्ती 25:41)। जैसे स्वर्ग तैयार किया हुआ स्थान है (यूहन्ना 14:1-3) वैसे ही नरक भी तैयार किया हुआ स्थान है, जिसे मूलत: शैतान के लिए तैयार किया गया था।

प्रकाशितवाक्य 20 शैतान को उसके लिए तैयार की गई जगह में फैंके जाने के बारे में है। पुस्तक में पहले उसके साथियों को फैंका बताया गया था,[1] परन्तु इससे बुराई खत्म नहीं हुई। बुराई पर पूर्ण विजय तब तक नहीं पाई जा सकती जब तक बुराई का मूल नष्ट नहीं होता। दिनभर मकड़ी के जालों को साफ करते रहें, परन्तु जब तक मकड़ी को नहीं मारते, तब तक जाले बनते ही रहेंगे।

प्रकाशितवाक्य 20 के पहले भाग में हमने शैतान को कैद किए जाते देखा था; अब हम उसे मिटाए जाते देखेंगे। शब्दों से इस घटना को बयान नहीं किया जा सकता। एक स्थानीय समाचार पत्र के कार्यालय ने अपनी दीवारों पर समाचार पत्र लगाए हुए हैं, जिनमें प्रमुख घटनाओं के शीर्षक दिए जाते हैं। एक शीर्षक में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है, ''अमेरिका ने युद्ध की घोषणा की।'' एक सुर्खी है ''युद्ध बन्द हो जाएगा।'' यह सुर्खी भी अधिक पुरानी नहीं है, ''इंसान के कदम चांद पर।'' प्रकाशितवाक्य 20 को यदि किसी समाचार पत्र में दिया जाए, तो इसकी सुर्खी पांच इंच के बड़े कॉलम में इस प्रकार होगी: ''**शैतान हार गया!**'' परमेश्वर के हर बालक के लिए यह कितना रोमांचकारी होना चाहिए!

यह पाठ बीसवें अध्याय से ही है, इसलिए इसकी कुछ और जटिल बातों को भी देख लेना आवश्यक है, परन्तु याद रखें कि इस अध्याय के उद्देश्य को न भूलें। यहां हम कहने वाले हैं, ''अलविदा, शैतान-*और पीछा छूटा*!''

पेचीदा ''क्यों?'' (20:1-3, 7, 8)

हमारे पाठ का मुख्य भाग वहां आरम्भ होता है, जहां आयतें 1 से 3 समाप्त होती हैं। उन आयतों में हमारे सामने यह आकृति रखी गई थी:

फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिसके हाथ में अथाह कुण्ड

की कुंजी, और एक बड़ी ज़ंजीर थी। और उसने उस अजगर, अर्थात पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है; पकड़ कर हज़ार वर्ष के लिए बान्ध दिया। और उसे अथाह कुण्ड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी कि वह हज़ार वर्ष के पूरे होने तक जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इसके बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिए खोला जाए (आयतें 1-3)।

बाद में हम 7 और 8 आयतों में पढ़ते हैं, ''और जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा, ... '' ध्यान दें कि शैतान जेल नहीं तोड़ता, बल्कि प्रभु उसे रिहा कर देता है।[2] इस अनोखे वाक्य ने कई जटिल प्रश्नों की बाढ़ ला दी है, और इससे अधिक परेशान करने वाली तो कोई है ही नहीं कि ''*क्यों*?'' स्पष्टतया कोई ईश्वरीय उद्देश्य ही होगा,[3] परन्तु वह उद्देश्य क्या हो सकता है?

प्रकाशितवाक्य की कुछ ही बातें हैं, जिनमें अधिकतर टीकाकार सहमत होते हैं, परन्तु यह उनमें से एक है। ''क्यों?'' के प्रश्न का लगभग एक सा उत्तर यही है कि *''हमें नहीं पता।''* डोनल्ड गुथरी ने लिखा है, ''ऐसी किताब में जो रहस्यों से भरी हो, यह थोड़ी देर के लिए छोड़ा जाना सबसे अधिक रहस्यमय घटनाओं में से एक है।''[4] फ्रैंक पैक ने लिखा है, ''[शैतान को] 'थोड़ी देर के लिए' छोड़ा जाना क्यों आवश्यक है, यह सब टीकाकारों के लिए एक रहस्य है।''[5] कुछ लेखक खोले जाने के कारण का अनुमान लगाते हैं; अन्य कहते हैं, ''रुककर देखते हैं''; परन्तु अधिकतर कहते हैं, किसी न किसी तरह ''हमें वास्तव में पक्का पता नहीं।''[6]

यदि आपकी रुचि अनुमान लगाने में है तो उसका नमूना यह है: *हो सकता है* परमेश्वर शैतान को मनुष्य जाति को परखने के लिए छोड़े, जैसे उसने अय्यूब को परखा था (अय्यूब 1; 2) और जैसे शैतान ने पतरस को परखना चाहा था (लूका 22:31)। *शायद* यह यह बताने के लिए हो कि जब यीशु आएगा तो पृथ्वी पर विश्वास ढूंढ़ पाना कितना कठिन होगा (लूका 18:8)। शैतान ने अन्य ईश्वरीय गुणों की नकल की है,[7] *शायद* द्वितीय आगमन की शैतान की यह आसानी से की गई नकल है (बेतुकापन दिखाने के लिए परमेश्वर द्वारा स्वीकृत)। *शायद* ''छोड़ दिया'' का यह हवाला मसीही लोगों को याद दिलाने के लिए है कि वे अपनी चौकसी रखने में कोताही न करें (1 पतरस 5:8)। *शायद* परमेश्वर शैतान को छोड़ देगा और उसे मनमानी करने देगा, जिससे परमेश्वर के सामने आने पर उसकी कमज़ोरी का पता चल जाए। इनमें से कुछ सुझाव लगता नहीं कि ठीक हो सकते हैं जबकि अन्य कुछ हद तक मानने योग्य हैं। परन्तु सब केवल अनुमान हैं।

ऊपर दिए गए अधिकतर अनुमान इस मान्यता पर आधारित हैं कि शैतान का छोड़ा जाना द्वितीय आगमन से कुछ पहले होगा। क्या यह सम्भव है कि कठिनाई का एक भाग यह है कि हम वचन में *समय* को गलत ढंग से देख रहे हैं।

असंगत ''कब?'' (20:3, 7)

छोड़ दिए जाने के साथ हमारी एक समस्या (शायद *बड़ी* समस्या) यह है कि दर्शन

में ''थोड़ी देर'' (आयत 3) ''हज़ार वर्ष'' *के बाद* आता है: शैतान को हज़ार वर्ष के लिए बान्धा गया है, जबकि उसी समय शहीद होने वाले पवित्र लोग राज कर रहे हैं। फिर जब सब कुछ ठीक लग रहा है तो शैतान को अचानक छोड़ दिया जाता है, ताकि वह मनमानी कर सके। छोड़े जाने का *समय* हमें उलझा देता है।

शायद हमें वचन में दिए समय के पहलू को ध्यान में रखकर वैसे ही अपने आप को बनाने की आवश्यकता है। याद रखें कि हम एक ऐसे दर्शन को देख रहे हैं, जिसमें सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल है। ऐसी स्थिति में समय की लम्बी अवधि के बाद आने वाली समय की लघु अवधि को मूल शब्दों में मानना चाहिए? जिस बात पर हम ज़ोर देना चाहते हैं, उसे ध्यान में रखें कि ''हज़ार वर्ष'' समय का काल उतना नहीं, जितना एक *अवधारणा* है। ऐसा होने पर हमें यह ''थोड़ी देर'' को समय के विशेष काल के रूप में नहीं मानना चाहिए। ('''थोड़ी देर' पर विचार'' देखें।) इसके बजाय *अवधारणा* को समझाने के लिए रूपक हो सकता है। कौन सी अवधारणा? कुछ सम्भावनाएं इस प्रकार हैं:

जैसा कि पहले एक पाठ में संकेत दिया गया था,[8] ''थोड़ी देर'' वाक्यांश केवल ''हज़ार वर्षों'' के अन्तर के रूप में दिया गया हो सकता है: शैतान का ''छोड़ा जाना'' थोड़ी देर का और उसके ''बान्धे जाने'' की तुलना में नगण्य था। शैतान को ईश्वरीय आदेश से हमेशा सीमित किया जाता है अर्थात वह जो कुछ भी करता है, परमेश्वर के नियन्त्रण में रहकर ही करता है।

''थोड़ी देर'' वाक्यांश का अर्थ यहां मूलत: वही हो सकता है, जो 12:12 में इस्तेमाल करते समय था: ''... क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है क्योंकि वह जानता है कि उसका थोड़ा ... समय और बाकी है।''[9] इन शब्दों का अर्थ है कि शैतान के दिन गिने हुए हैं और यह उसे मालूम है। अध्याय 12 शैतान को हारे हुए शत्रु के रूप में दिखाता है, जबकि अध्याय 20 उसे बन्धे हुए शत्रु के रूप में दिखाता है। दोनों ही मामलों में हम देखते हैं कि ''थोड़ी देर'' जो उसके पास है, उसमें वह अधिक से अधिक हानि पहुंचाना चाहता है।

हो सकता है ''थोड़ी देर'' वाक्यांश का संकेत यह हो कि ऐसे अवसर आएंगे, जब शैतान की सीमाओं को परिस्थितियों द्वारा कुछ समय के लिए उठा दिया जाएगा।[10] पहले हमने यह ज़ोर दिया था कि शैतान को क्रूस और सुसमाचार के द्वारा बान्धा गया है। उन समयों और स्थानों का क्या होगा, जहां सुसमाचार नहीं सुनाया गया, जहां लोगों को क्रूस के बारे में सुनने का अवसर नहीं मिला है? अफसोस की बात है कि ऐसी परिस्थितियां हैं, यानी वे परिस्थितियां आज भी हैं और आगे भी रहेंगी। ऐसा होने पर शैतान का लोगों के मनों और जीवनों पर बे-रोक-टोक नियन्त्रण है।

शायद ''थोड़ी देर'' वाक्यांश में जो संदेश देना चाहा गया है उस अवधारणा को आपकी सोच तक पहुंचाने के लिए ये विचार काफी हैं।

''कब'' के विषय को छोड़ने से पहले मुझे एक अन्तिम सम्भावना का सुझाव देना चाहिए: ध्यान दें कि आयत 5 और 7 दोनों ही ''हज़ार वर्ष'' को ''पूरे'' होने के अर्थ में

७दिखाती हैं।[11] आयत 5 के सम्बन्ध में सुझाव दिया जाता है कि '' 'हज़ार वर्ष' के 'पूरा होने' के वाक्य को इस युग के अन्त के अर्थ में लिया जाए-जब मसीह वापस आएगा, मुर्दे जिलाए जाएंगे और हर किसी का न्याय होगा।'' यदि इस वाक्यांश का अर्थ आयत 5 वाला है तो इसका अर्थ आयत 7 वाला भी हो सकता है। यदि ऐसा है तो, ''थोड़ी देर'' मसीह के वापस आने की समयावधि नहीं, बल्कि उसके वापस आने *के समय की* पलक झपकने की घटना है। अन्य शब्दों में शैतान को इसलिए छोड़ा गया है, ताकि वह नष्ट हो सके। हम इसे ''शैतान के न्याय का दिन'' मान सकते हैं।

इस व्याख्या में आपत्ति यह है कि दर्शन में समय चलता प्रतीत होता है जबकि शैतान जाति-जाति को गुमराह करके पृथ्वी के कोने-कोने से सेना इकट्ठी करता है। याद रखें कि यह केवल संकेत है और इसे अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए। समय को जहां तक हम जानते हैं, इस सब में नहीं होगा। शायद संकेत का उद्देश्य यह दिखाना है कि ''हज़ार वर्ष'' ने शैतान को बदला नहीं है (वह आज भी धोखा देने वाला और परमेश्वर का शत्रु है) और इसलिए वह आग की झील में फैंके जाने के योग्य है।

क्या आप काफ़ी उलझन में पड़ गए हैं? चलिए ''कौन?'' के प्रश्न के सम्बन्ध में तीन वाक्य बनाते हैं: (1) ''थोड़ी देर'' के समय के बारे में जो सम्भावनाएं मैंने बताई हैं, आपके लिए उन्हें समझना और याद करना आवश्यक नहीं है। (2) अलग-अलग सम्भावनाओं की सूची देने का एक उद्देश्य यह दिखाना है कि ''कब'' और ''थोड़ी देर'' के बारे में हम किसी भी प्रकार निश्चितता से नहीं बोल सकते। (3) यह सब यह दावा करने के लिए तैयारी भर ही है कि अन्तिम विश्लेषण यही है कि आपके लिए ''कब'' में पवित्र आत्मा का संदेश न के बराबर है। महत्व 20:7-10 के ''क्यों?'' या ''कब?'' का नहीं, बल्कि ''क्या?'' का है कि *शैतान का अन्तिम भविष्य क्या होगा?*

महत्वपूर्ण ''क्या?'' (20:7-10)

दिमाग़ में रखते हुए कि यह पद सांकेतिक है, आइए इसे और निकट से देखें।

धोखा देने वाला

मेरा साला टी.एन. ''बड'' जेल में पूर्णकालिक सेवकाई करता है। उसने मुझे बताया है कि देश भर में जेल से छूटने वाले आधे से अधिक लोग, जो यह नहीं दिखाते कि उन्होंने अपने अनुभव से कुछ सीखा है, फिर जेल में जाते हैं। यूहन्ना वाले दर्शन में शैतान हज़ार वर्ष तक जेल में था, परन्तु उसने उससे कोई सबक नहीं लिया। छूटते ही वह वही काम करने लग पड़ा, जो वह पहले करता था: ''और जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। और उन जातियों को ... भरमाकर लड़ाई के लिए इकट्ठे करने को निकलेगा'' (आयतें 7, 8क)।

''जातियों'' को ''पृथ्वी के चारों कोनों'' के रूप में वर्णित किया गया है। यहां इस्तेमाल हुई शब्दावली का दूरी से कोई सम्बन्ध नहीं है,[12] बल्कि विश्वव्यापकता से है।

''चार'' मनुष्यजाति का अंक है।[13] ''पृथ्वी के चारों ओर'' वाक्यांश केवल ''पूरे संसार से'' का संकेत है।

जातियों को ''याजूज और माजूज'' के रूप में पहचाना गया है (आयत 8ख)। ये अजीब नाम उस काल्पनिक युद्ध का भाग हैं, जिसे लोग ने ''आर्मिगद्दोन'' कहते हैं।[14] ये नाम हमें अजीब से लगते हैं, परन्तु आरम्भिक मसीही इन से भली-भांति परिचित थे। याजूज और माजूज ''यहूदी मनों पर छाए हुए थे।''[15] माजूज येपेत का एक पुत्र था (उत्पत्ति 10:2; 1 इतिहास 1:5 भी देखें)। स्पष्टतया माजूज या मागोग की संतान बढ़कर एक जाति बन चुकी थी और ''माजूज'' उनके देश का नाम बन गया था (यहेजकेल 38:2; 39:6)। ''याजूज'' या ''गोग'' योएल के एक पुत्र का नाम था (1 इतिहास 5:4)। अस्पष्ट कारणों से यहेजकेल नबी ने दोनों शब्दों को उपयुक्त बनाकर इस्राएल के विरुद्ध आने वाली सेनाओं के हाकिम को ''गोग'' कहते हुए सांकेतिक रूप में मगोग का इस्तेमाल किया था (यहेजकेल 38:2)।[17]

बाइबल से बाहर के अपोकलिप्टिक लेखकों ने यहेजकेल की शब्दावली को लेकर दोनों नामों का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में मसीहा के शत्रुओं के लिए किया। प्रकाशितवाक्य 20:8 में इन का सांकेतिक अर्थ ही इस्तेमाल हुआ है। वे यूहन्ना या हमारे समय में पाई जाने वाली विशेष जातियों की नहीं, बल्कि सामान्य रूप में *उन सब की* बात करते हैं ''जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। जिम मैक्गुइगन ने कहा है, ''ये लोग कोई भी हो सकते हैं और विशेष रूप से कोई भी नहीं।''[18] जी. बी. केयर्ड ने लिखा है, ''गोग की टोपी जिसे भी आ जाए वह उसे पहन सकता है।''[19]

वचन के इस भाग से सबक यह है कि शैतान अपने काम के लिए कभी भी किसी को भी लगा सकता है। उसके दो मुख्य सहयोगी अर्थात पशु और भविष्यवक्ता पराजित हो गए हो सकते हैं, परन्तु इससे वह रुका नहीं। उसने केवल बाहर जाकर हगोग और मगोग को काम पर लगा लिया।

यहेजकेल की भविष्यवाणी की एक और बात आप को पता होनी आवश्यक है कि ज़ोर गोग और मगोग पर *परमेश्वर का क्रोध* उण्डेले जाने पर है। (उदाहरण के लिए देखें, यहेजकेल 39:6।) इस प्रकार प्रकाशितवाक्य 20 में ''गोग'' और ''मगोग'' परमेश्वर के शत्रुओं के लिए ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के *शीघ्र परास्त होने वाले* सभी शत्रुओं के लिए भी है।

दृढ़ निश्चय

जातियों को भरमाने का शैतान का उद्देश्य ''लड़ाई के लिए इकट्ठा करना'' था (आयत 8ग)। भलाई और बुराई के बीच होने वाला यह वही निर्णायक युद्ध है[20], जो 16:14-16 और 19:19 में पढ़ने को मिलता है।[21] (शैतान और उसकी सेनाओं का चित्र देखें।)

आयत 8 का अन्तिम भाग कहता है कि शैतान द्वारा इकट्ठी की गई टुकड़ियों की ''गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी'' (आयत 8घ)। इस पद के चरम की ओर जाने पर हमें सब से शक्तिशाली सेना की कल्पना करनी होगी। यह विशाल सेना ''सारी पृथ्वी पर फैल जाएगी'' (आयत 9क)। यह भौगोलिक स्थिति नहीं है,[22] बल्कि केवल संकेत का एक भाग ही है।

''पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को'' (आयत 9ख) घेरा सेना ने ही डाला था। ''छावनी'' और ''नगर'' लोगों के दो अलग-अलग समूहों का नहीं, बल्कि एक ही समूह अर्थात परमेश्वर के लोगों का संकेत है। होमेर हेली ने लिखा है, ''दोनों शब्द एक ही समूह के दो पहलुओं अर्थात प्रभु की कलीसिया का सुझाव देते हैं।''[23] हेनरी स्वेट ने लिखा है, '' 'पवित्र लोगों की छावनी' और 'प्रिय नगर' एक देह अर्थात विश्वव्यापी कलीसिया के दो पहलू हैं, ...''[24] अध्याय 12 में हमें बताया गया था कि ''अजगर ... क्रोधित हुआ, और ... जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, [उनसे] लड़ने को गया'' (आयत 17)। अन्त तक यीशु के अनुयायी शैतान की शत्रुता और परमेश्वर के प्रेम का केन्द्र बने रहे।

छावनी नगर से अलग है परन्तु प्रत्येक शब्द हमें कलीसिया के बारे में बताता है। ''छावनी'' शब्द *ज़िम्मेदारी* को बताता है अर्थात यह वह शब्द है जो जंगल में उनके घूमने से जुड़ा हुआ है (देखें इब्रानियों 13:11, 13)। यह हमें याद दिलाता है कि हम पराये देश में रहने वाले परदेसी हैं (इब्रानियों 11:13)।[25] ''नगर'' शब्द का संकेत *प्रतिफल* से है जिसमें यहूदियों को मिलने वाला ''प्रिय नगर'' सांसारिक यरूशलेम था, जबकि मसीही लोग ''सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर *स्वर्गीय* यरूशलेम के पास'' (इब्रानियों 12:22) आए हैं।[26] मसीही लोग प्रभु के साथ यहीं पर संगति करते हैं।[27]

शैतान की सेनाओं से घिरी छावनी/नगर की कल्पना करें। सांसारिक दृष्टिकोण से परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध होने वाली बातें, लगता है कि कभी ख़त्म नहीं होंगी। स्पष्ट निराशा को देखे बिना आप यह नहीं समझ सकते कि आगे क्या होने वाला है। शैतान ने अपनी अन्तिम आपत्ति (''अन्तिम'' शब्द पर ज़ोर देते हुए) जारी कर दी है।

हार गई

जब शैतान की सेनाएं जोरदार मुक्का मारने को थीं तो क्या हुआ? ''आग ने स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म कर दिया'' (आयत 9ग)।[28]

कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''स्वर्ग से, *परेमश्वर की ओर से* आग'' है।[29] हो सकता है कि यह मूल में न हो परन्तु इससे बात समझ में आती है, परमेश्वर ने सदोम और अमोरा पर आग बरसाई थी (उत्पत्ति 19:24), उसने नादाब और अबीहू को दण्ड देने के लिए आग का इस्तेमाल किया था (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2), और उसने यहेजकेल वाले मगोग पर आग भेजने का वायदा किया था (यहेजकेल 39:6)। वैसे ही किसी दिन प्रभु ''धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और ... पलटा लेगा'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)।

ध्यान दें कि इस ''युद्ध'' की किसी भी बात में वास्तविक लड़ाई वाली कोई बात नहीं थी। बर्टन कॉफमैन ने टिप्पणी की है, ''यह किसी 'युद्ध' से अधिक नहीं था? परमेश्वर ने कहा और हो गया था। परमेश्वर ने बुराई के साथ एक ही बड़े धमाके में सारा हिसाब चुका दिया।''[30] ''परमेश्वर की सामर्थ इतनी ज़बर्दस्त [है] कि जब वह बुराई को नष्ट करने की सोचे तो युद्ध का दृश्य भी नहीं हो सकता।''[31]

नष्ट हुआ

शैतान का क्या हुआ? ''और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे'' (आयत 10)। शैतान के आग और गन्धक की झील में फैंके जाने का चित्र देखें (20:10)।

प्रकाशितवाक्य के रूपक में, अजगर को पहले ''पृथ्वी पर गिरा दिया गया'' था (12:9), फिर ''गंधक की झील में डाल दिया'' गया है (20:10)।[33] ''इस प्रकार उस घमण्डी मन का खात्मा हो गया जो इतने समय से मनुष्यजाति को भरमाता और डराता था।''[34] वही ''जिसकी मूर्ति मनुष्य जाति के इतिहास की लम्बी दुखद तराई पर घनी छाया डालती है।''[35]

आयत 10 छोड़ने से पहले, चार टिप्पणियां करना सही होगा:

(1) शैतान इस समय नरक में नहीं है। उसे समय के अन्त से पहले नरक में नहीं डाला जाएगा। उसके साथी, जैसे रोम आदि इतिहास के मार्ग में गल रहे हैं, परन्तु शैतान प्रभु के वापस आने तक रहेगा।

(2) शैतान को *दण्ड देने* के लिए नरक में नहीं डाला जाएगा। आमतौर पर यह नासमझी पाई जाती है कि शैतान नरक का मुख्य निरीक्षक है और वह वहां प्रवेश करने वालों को सताने में आनन्द लेता है। *पैराडाइज़ लॉस्ट* में जॉन मिल्टन ने शैतान को यह कहते दिखाया है, ''स्वर्ग में सेवा करने से नरक में राज करना अच्छा है।''[36] मिल्टन बहुत बड़ा कवि हो सकता है, परन्तु वह कमज़ोर धर्मशास्त्री था। शैतान नरक में उस पर नियन्त्रण करने के लिए नहीं, बल्कि दण्ड पाने के लिए जाएगा। वहां वह सताने वाला नहीं होगा क्योंकि वह स्वयं भी सताया जाएगा।

(3) नरक खतरनाक जगह होगी। इस पद में ''आग और गंधक की झील'' का रूपक है (आयत 10ख)। बाइबल में एक और जगह इसे ''बाहर अन्धियारा'' कहा गया है, जहां ''रोना, और दांत पीसना होगा'' (मत्ती 22:13)। यह वह स्थान है, जहां ''कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती'' (मरकुस 9:48)।[37] जैसे एच. एल. एलिसन ने कहा है, यह तथ्य कि इस विवरण में संकेत का इस्तेमाल हुआ है ''हमें इसके अर्थ से वंचित होने का अधिकार नहीं देता। संकेत से हमेशा उससे जो पूरी सच्चाई होती है *कम* ही पता चलता है।''[38] पवित्र शास्त्र में इस्तेमाल होने वाले भयभीत करने वाले शब्दों को पढ़कर हम यह सोचकर कांप जाते हैं कि नरक कितना भयानक होगा!

(4) नरक सदा के लिए होगा। कुछ लोग नरक की व्याख्या, सर्वनाश के रूप में करने का प्रयास करते हैं,[39] परन्तु वचन कहता है कि शैतान और उसके पुराने साथी ''रात-युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे'' (आयत 10ग)।[40] लियोन मौरिस का अवलोकन है, ''कोई अन्त नहीं।''[41]

शैतान के अन्त अर्थात उसके काम के अन्त, उसके प्रभाव के अन्त और उसके प्रलोभनों के अन्त और मनुष्य जाति को उसके सताने के अन्त की यही तस्वीर है। ''अलविदा, शैतान-और पीछा छोड़!''

सारांश

हमने प्रकाशितवाक्य के सबसे कठिन भागों में से एक को तीन पाठों में बताया है। यदि आप हमारे जैसे हैं तो प्रकाशितवाक्य 20:1-10 के कुछ भाग अभी भी आपके मन में स्पष्ट नहीं हैं और कई बातों से आप अभी भी उलझन में हैं। आपको इस वचन को पढ़ते रहकर प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर आपको इसे और गहराई से समझने की आशीष दे। ऐसा करते हुए यह कभी न भूलें कि यह संदेश विस्तारपूर्वक नहीं है बल्कि पूरी तस्वीर है। पैक ने 1 से 10 आयतों के संदेश को इन शब्दों में संक्षित किया है:

> ... लाई गई मुख्य बड़ी सच्चाई यह है कि जो लोग प्रभु के वफादार है उन्हें मरने के बाद उसकी महिमा मिलेगी और शैतान का अपने सभी सहयोगियों के साथ निकाला जाना पक्का है। इस बड़ी प्रतिज्ञा को अपनी होने का दावा करते हुए हम जय की उस आशा और उम्मीद के साथ रह सकते हैं, जो प्रभु हमें देता है।[42]

एक बार एक आदमी सर्कस के कलाकार से उस जाल के उद्देश्य की बात कर रहा था, जो उसके और उसके साथी कलाकारों के कलाबाज़ी करते समय नीचे बिछाया जाता था। कलाकार ने माना कि नीचे बिछाया गया जाल उनकी गर्दन टूटने से बचाने के लिए है, परन्तु साथ ही कहा, ''बिना जाल के हम इतना घबरा जाएंगे जैसे गिरने ही वाले हों। यदि जाल न होता तो हमें कुछ करतब करने का साहस न होता।''[43]

प्रकाशितवाक्य 20:1-10 में दिए गए ऐसे आश्वासन अपने लोगों के लिए परमेश्वर का ''सुरक्षा जाल'' है। यह ''सुरक्षा जाल'' मसीही लोगों को वह करने के योग्य बनाते हैं, जो उसके बिना वे कभी नहीं कर सकते थे।

क्या यह आश्वासन आपके लिए है? क्या आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा कर सकते हैं? आइए इसे एक अलग ढंग से देखते हैं: क्या आप परमेश्वर की संतान हैं? उसकी विश्वासी संतान? यदि नहीं तो भरोसे से उसकी आज्ञा मानकर उसके पास आने का समय अभी है![44]

सिखाने वाले तथा प्रचारकों के लिए नोट

इस पाठ के कुछ वैकल्पिक शीर्षक इस प्रकार हैं: ''नाश करने वालों का नाश'';

''शैतान का अन्तिम गीत''; ''शैतान का भविष्य और अन्त''; ''अच्छी मुक्ति!''

टिप्पणियां

[1]आप चाहें तो एक क्रम में बताए गए मसीह के शत्रुओं और दृश्य के उलटे क्रम में जाने पर जो कुछ हमने सीखा है उसकी समीक्षा कर सकते हैं। इसी पुस्तक में ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' पाठ देखें। [2]एक सच्चाई जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए वह यह है कि प्रकाशितवाक्य एक बार फिर घोषणा करता है चाहे जो भी हो जाए, *नियन्त्रण परमेश्वर का है*। [3]आयत 3 का ''जाएगा'' शब्द यूनानी शब्द *dei* का अनुवाद है, जो ''नैतिक आवश्यकता'' का संकेत देता है। [4]डोनल्ड गुथरी, *द रेलेवेंस ऑफ़ जॉन'स अपोकलिप्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 102-3. [5]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 2 (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 52. [6]यह प्रकाशितवाक्य के लिए अपनाए जाने वाले ढंग के बावजूद सच है। [7]अध्याय 13 में दो पशुओं का अध्ययन करते हुए हमने देखा कि शैतान के ''ईश्वरीयता,'' ''पुनरुत्थान'' और इसके जैसी अपनी ही नकलें हैं। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''देखो, सुनो और समझो'' और ''वह बड़ा भरमाने वाला'' पर विचार करें।) [8]इसी पुस्तक के पाठ ''शैतान का बान्धा जाना'' में नोट्स देखें। [9]12:12 का ''ही'' मूल धर्मशास्त्र में नहीं मिलता। (इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है।) 20:3 से अधिक मेल खाता बनाने के लिए मैंने ''ही'' शब्द को हटा दिया है। [10]अतिवादियों का यह मानना है कि ''थोड़ी देर'' रोमी साम्राज्य पर मसीहियत की विजय के बाद भी सताव के प्रकोप की बात है।

[11]यह वाक्यांश हिन्दी और यूनानी दोनों आयतों में एक सा है। [12]भावुकतावादी लोग आमतौर पर इन देशों को अमेरिका से बहुत दूर बना देते हैं। [13]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 52 पर ''चार'' अंक का सांकेतिक महत्व देखें। [14]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''युद्ध, जो न कभी था और न होगा'' में देखें। [15]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., दे डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 194. [16]शायद मागोग ने किसी समय यहूदियों का विरोध किया था जो बाइबल में नहीं बताया गया। शायद यह नाम इसलिए चुना गया क्योंकि वे इस्राएलियों से कुछ दूरी पर रहते थे और उनका एक अज्ञात अस्तित्व माना जाता था। [17]कई टीकाकारों का मानना है कि यहेजकेल 38 और 39 वाला ''गोग'' अन्तियोकुस ऐपिफेन्स ही है। अन्तियोकुस ऐपिफेन्स वह घृणित सीरियाई हाकिम था जिसने यहूदी मन्दिर को अपवित्र किया था। उसके कार्यों के कारण मक्काबी विद्रोह हुआ और पुराने और नये नियमों के अन्तराल में यहूदी स्वतन्त्रता का संक्षिप्त काल रहा। कइयों का मानना है कि यहेजकेल के दिमाग़ में प्राचीन बाबुल था। [18]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 304. [19]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 256. [20]तीनों विवरणों के उसी युद्ध के बारे में दिए जाने के कारणों के अलावा इस पर विचार करें: गोग और मागोग के बारे में रूपक का इस्तेमाल अध्याय 19 के युद्ध के दूसरे विवरण के सम्बन्ध के किया गया था। इस पुस्तक के पाठ ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' में नोट्स देखें।

[21]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''युद्ध, जो न कभी था और न होगा'' पाठ देखें। इस पुस्तक के पाठ ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' में 19:19 पर टिप्पणियां भी देखें। [22]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''युद्ध, जो न कभी था और न होगा'' में देखें। [23]होमेर हेली, *रैवलेशन: ऐन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 398. [24]हैनरी बी. स्वेट *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन:

विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 269. [25]कुछ लेखक उल्लेख करते हैं कि अनुवादित यूनानी शब्द ''छावनी'' का इस्तेमाल नये नियम में कई बार *सैनिक* छावनी के लिए होता है, इसलिए इस शब्द को आत्मिक युद्ध के लिए जो मसीह लोगों को लड़ना है, इस्तेमाल किया जा सकता है (इफिसियों 6:10-18)। [26]गलातियों 4:26 भी देखें। [27]''स्वर्गीय यरूशलेम'' के बारे में हम अध्याय 21 और 22 का अध्ययन करने पर और सीखेंगे। [28]एक बार फिर, यह ज़ोर देने के लिए कि 20:8, 9 अध्याय 16 और 19 वाले ''युद्ध'' को ही दर्शाता है, मैंने ब्रायन वाट्स से ''शैतान और उसकी सेनाएं'' वाले दृश्य के ''युद्ध'' को बताने के लिए उन्हीं अध्यायों में इस्तेमाल किए गए आर्ट वर्क दोहराने के लिए कहा। उन्होंने अजगर और छावनी के साथ स्वर्ग से आने वाली विनाशकारी आग के विवरण जोड़ दिए। जैसा मैंने पहले कहा, हो सकता है कि यह तरीका महान आर्ट न हो, परन्तु मुझे इस विचार को फिर से ज़ोर दिए जाने की उम्मीद लगती है कि तीनों वचन एक ही ''युद्ध'' की बात हैं। [29]मार्टिन एच. फ्रैंज़मैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 134 देखें। [30]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 478.

[31]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 233. [32]देखें 19:20. [33]''फैंकना'' के अर्थ वाली यूनानी क्रिया का इस्तेमाल हर हवाले में किया गया है। यह है तो सांकेतिक, परन्तु इसका विकास दिलचस्प है। [34]फ्रैंजमैन, 134. [35]ओवन एल. क्राउच, *एक्पोज़िटरी प्रीचिंग एण्ड टीचिंग: रैवलेशन* (जौप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 362. [36]जेम्स एम. एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 99 में उद्धृत बुक 1, लाइन 262. *पैराडाइज़ लॉस्ट* अंग्रेज कवि जॉन मिल्टन (1608-74) की उत्कृष्ट रचना थी। [37]इस पुस्तक के पाठ ''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' में 19:20 पर नोट्स देखें। इसी पुस्तक में ''आग और गन्धक की झील'' पर संक्षिप्त चर्चा भी देखें। [38]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 84-85. [39]कहीं-कहीं ''नाश करना'' या ''विनाश'' का इस्तेमाल मैंने शैतान के भविष्य के सम्बन्ध में किया है। आशा है कि इनमें से किसी का अर्थ अस्तित्व मिटने के अर्थ में नहीं है। एक आदमी किसी दूसरे आदमी से कहता है, ''मैं तुझे तबाह कर दूंगा!'' परन्तु आमतौर पर इसका अर्थ यह नहीं होता कि वह उसे मिटा देना चाहता है। बल्कि उसकी योजना उसके काम या जीवन के कुछ पहलू को नष्ट करने की होती है। वैसे ही अन्ततः शैतान का काम खत्म हो जाएगा। उसका प्रभाव जाता रहेगा, परन्तु वह स्वयं नरक में जीवित रहेगा। [40]''युगानुयुग'' वाक्यांश और नरक के अनन्तकालिक होने के महत्व पर चर्चा के लिए, देखें हेली, 398-99.

[41]मौरिस, 233. [42]पैक, 55. [43]क्रेग ब्रायन लारसन, सं., *इलस्ट्रेशन्स फ़ॉर प्रीचिंग एण्ड टीचिंग फ्रॉम* लीडिरशिप जरनल (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1993), 215 से लिया गया। [44]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को बताएं कि मसीही कैसे बनना है और परमेश्वर की भटकी हुई संतान उसके पास वापस कैसे आ सकती है। इस पुस्तक में ''और, अन्त में'' पाठ में टिप्पणी 50 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. नरक मूल में किसके लिए तैयार किया गया था?
2. बुराई को पूरी तरह मिटाने के लिए शैतान को मिटाना क्यों आवश्यक है?
3. *आपको* क्यों लगता है कि शैतान को ''थोड़ी देर'' के लिए छोड़ा जाएगा? (आपका विचार किसी भी और व्यक्ति के विचार जितना सही है!)
4. ''हज़ार वर्ष'' मूलतः एक अवधारणा (सम्पूर्णता) को दिखाते हैं, तो क्या यह सम्भव

है कि ''थोड़ी देर'' भी किसी अवधारणा को दिखाता हो? यदि आपका उत्तर ''हां'' है तो आप को क्या लगता है कि वह कौन सी अवधारणा हो सकती है?

5. हमारे पाठ के अनुसार, क्या शैतान ने ''हज़ार वर्ष'' की कैद से कुछ सबक सीखा?
6. ''गोग और मगोग'' नामों की पृष्ठभूमि बाइबल में से बताएं। प्रकाशितवाक्य 20 में वे किस बात को दर्शाते हैं?
7. आयत 9 में ''छावनी'' / ''नगर'' किसे कहा गया है? प्रभु की कलीसिया के बारे में इन शब्दों से क्या पता चलता है?
8. कथित ''आर्मिगद्दोन का युद्ध'' के बारे में जो हमने पहले जाना है उस पर विचार करें। इस ''युद्ध'' के पिछले दो वृत्तातों में क्या कोई वास्तविक युद्ध हुआ? पिछले दोनों वृत्तांतों में क्या हुआ? इस वृत्तांत में क्या हुआ?
9. अपनी सेना की पराजय के बाद शैतान का क्या हुआ? क्या उसे नरक का अधिकारी बनाकर उसमें भेज दिया गया?
10. क्या नरक खतरनाक होगा? आप वहां जाने से कैसे दूर रह सकते हैं?

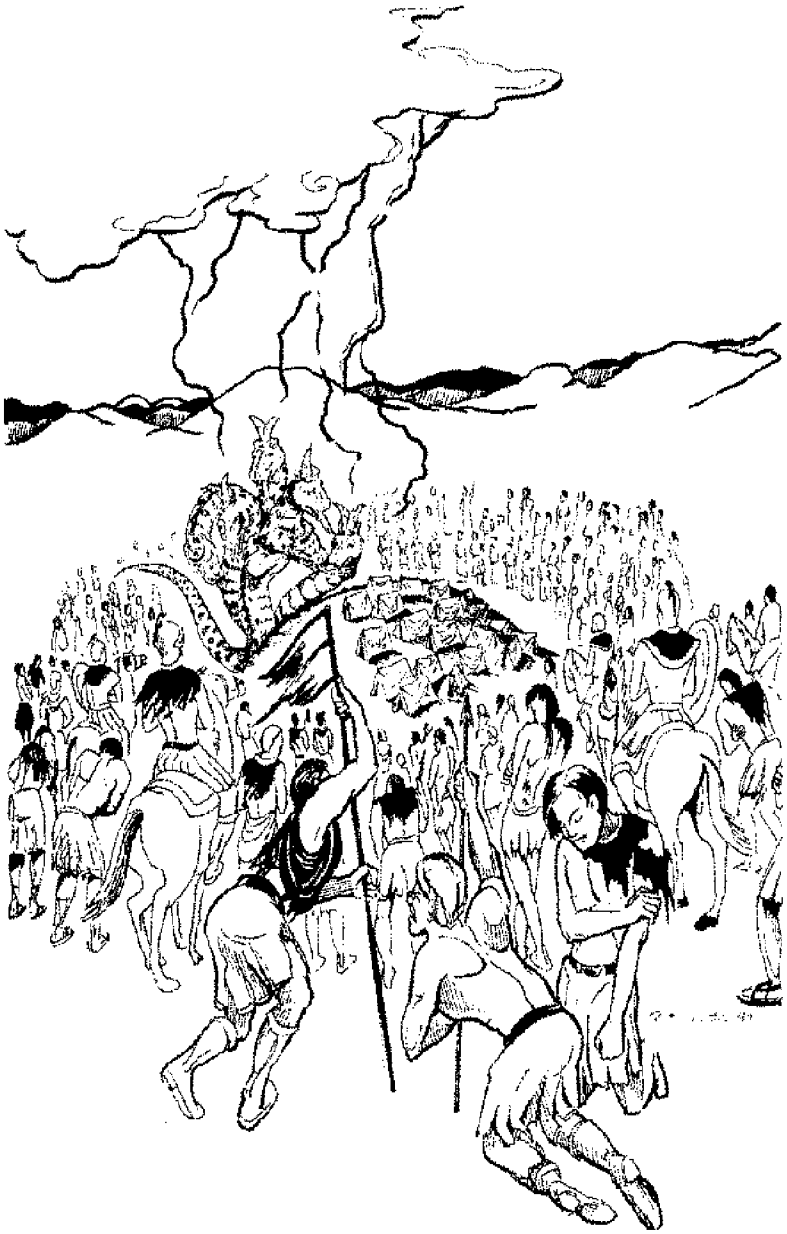

शैतान और उसकी सेनाओं (20:8, 9)

शैतान के आग और गन्धक की झील में फेंके जाने (20:10)